राज्य आनंद संस्थान

संस्करण : मार्च 2026

प्रकाशक : UHV-RAS Team

आनंद संचारिका

मासिक पत्रिका

आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर

राज्य आनंद संस्थान, आनंद विभाग, म.प्र. शासन

मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल परिसर, बोर्ड ऑफिस, शिवाजी नगर, भोपाल 462011

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय-वस्तु	पृष्ठ क्रमांक
1.	पाठकों के लिए संदेश	3
2.	प्रमुख वक्तव्य (यूएचवी* एवं आनंद संचारिका के बारे में)	4
3..	विशेष आलेख : अध्ययन एवं अभ्यास	6
4.	मेरी यूएचवी यात्रा	9
5.	प्रतिभागियों का स्व-मूल्यांकन	10
6.	आरएएस**- यूएचवी के इस माह के कार्यक्रम	13
7.	स्नेह संचार सभा की रिपोर्ट	16
8.	ऑनलाइन साप्ताहिक सभाएं	17
9.	आरएएस-यूएचवी के आगामी कार्यक्रम	19
10.	प्रदेश से बाहर यूएचवी के प्रयास	19
11.	यूएचवी छात्रों की दृष्टि में	20
12.	पाठकों के फीडबैक	22
13.	मूल्य प्रेरणा पुष्प	24
14.	प्रदेश के विद्यालयों में 'आनंद सभा' संचालन की कुछ झलकियां	25
14.	सार्वभौमिक मानवीय मूल्य समाचार पत्रों की दृष्टि से	26
15.	पाठकों के लिए महत्वपूर्ण सूचना	27

* यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूज़

** राज्य आनंद संस्थान

पाठकों के लिए संदेश

प्रिय पाठको,

आनंद की यात्रा: कर्तव्य से आत्मबोध तक

"मानव जीवन केवल कार्यों की श्रृंखला नहीं, बल्कि अनुभूतियों की एक गहन यात्रा है। यह यात्रा हमें बाहर की दुनिया से उठाकर भीतर की गहराइयों तक ले जाती है। जब हम कार्य को बोझ मानकर करते हैं, तो वह थकान, तनाव और असंतोष उत्पन्न करता है; परंतु जब वही कार्य हम जिम्मेदारी, कर्तव्य और समर्पण के भाव से करते हैं, तो उसमें एक अद्भुत आनंद का संचार होने लगता है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि "जो कार्य हमें मिला है, उसे पूरी जिम्मेदारी, ईमानदारी और आनंद के साथ करना ही सच्ची पूजा है।"

आज के इस तीव्र गति वाले युग में "आनंद" शब्द का महत्व और भी बढ़ गया है। जैसा हम सोचते हैं, वैसा ही हमारा व्यक्तित्व बनता है। यदि हमारे विचार सकारात्मक, संतुलित और आनंदमय हैं, तो हमारा जीवन भी उसी दिशा में विकसित होता है। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने चिंतन को शुद्ध, सरल और सकारात्मक बनाए रखें। जब मनुष्य स्वयं को साध लेता है, तब उसे बाहरी संघर्षों से मुक्ति मिल जाती है और वह भीतर से प्रसन्न और स्वतंत्र हो जाता है।

महान विचारक रवींद्रनाथ टैगोर को "गुरुदेव" की उपाधि उनके ज्ञान, संवेदनशीलता और आनंदमय जीवन-दृष्टि के कारण मिली। उनका संपूर्ण जीवन इस बात का उदाहरण है कि सच्चा आनंद बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आत्मा के स्पर्श में निहित है। इसी भाव को और गहराई से समझाने के लिए भगवान महावीर स्वामी का जीवन एक दिव्य प्रेरणा स्रोत है। उन्होंने स्पष्ट कहा—"दूसरों से क्या लड़ना, जो स्वयं से लड़ता है वही सच्चा वीर होता है।" आत्म-विजय ही सबसे बड़ी विजय है। अपने भीतर के क्रोध, अहंकार, लोभ और मोह को जीत लेना ही सच्चे आनंद की प्राप्ति का मार्ग है।

आज के परिवर्तित समय में, जब जीवन में तनाव, प्रतिस्पर्धा और भागदौड़ बढ़ रही है, ऐसे में मध्य प्रदेश शासन द्वारा संचालित आनंद संस्थान एक अत्यंत प्रेरणादायी पहल बनकर उभरा है। यह संस्थान लोगों को आनंद की अनुभूति कराने, जीवन में संतुलन स्थापित करने और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। ध्यान, योग, संवाद, सामूहिक गतिविधियाँ और मानवीय मूल्यों के माध्यम से यह संस्थान समाज में एक नई चेतना का संचार कर रहा है। आइए, हम सभी इस आनंद यात्रा को अपनाएं, अपने जीवन में सकारात्मकता, संतुलन और आत्मिक शांति का संचार करें तथा समाज को भी आनंदमय बनाने में अपना योगदान दें।

आनंद संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका आनंद संचारिका को हार्दिक शुभकामनाएं हैं कि वह इसी प्रकार समाज को आनंद, संतुलन और सकारात्मकता की दिशा में निरंतर प्रेरित करता रहे और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में खुशियों का प्रकाश फैलाता रहे।"

डॉ. मनीष वर्मा
अपर संचालक,समग्र शिक्षा अभियान,
लोक शिक्षण संचालनालय,भोपाल,
मध्य प्रदेश

प्रमुख वक्तव्य : यू.एच.वी. एवं आनंद संचारिका के बारे में

"राज्य आनंद संस्थान और शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालयों में आनंद सभा के द्वारा मूल्य शिक्षा स्थापित करने हेतु किया गया प्रयास बहुत ही सराहनीय और सार्थक है। इस विषय वस्तु से गुजर कर हमारे शिक्षक व्यवस्था को समझ कर उसके अनुसार जीने की दिशा में बढ़ रहे हैं। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में बच्चों के समग्र विकास हेतु कौशल शिक्षा के साथ-साथ मूल्य शिक्षा भी आवश्यक हो गई है। और विद्यालयों में आनंद सभा की कक्षाओं का संचालन बच्चों में मानवीय मूल्य स्थापित करने में सहायक हो रहा है। मैंने स्वयं भी सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की कार्यशाला में सहभागिता की थी। मानव की निरंतर सुख समृद्धि के लिए समझ संबंध और सुविधा का सही क्रम तय करना अत्यंत आवश्यक है। सही समझ कर हम समाधानित होते हैं और एक अखंड समाज की स्थापना की और अग्रसर होते हैं। समाज में इस कार्य को विस्तार देने में लगे सभी साथियों को मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।"

श्री आर पी कुर्मी
पूर्व प्राचार्य
शासकीय सांदीपनि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जिला-दमोह

"राज्य आनंद संस्थान का यह बहुत ही महत्वपूर्ण प्रोग्राम है जिसमें बच्चों के समग्र विकास को केंद्र में रख कर सारा कार्यक्रम बनाया गया है। आनंद सभा बच्चों की समझ से व्यक्तित्व, मूल्य और सामाजिक गुणों का संतुलित विकास करती है। हमारे विद्यालय में प्रति शनिवार आनंद सभा का आयोजन किया जाता है जिससे बच्चों के व्यवहार में स्व-अनुशासन बढ़ा है, उनमें सीखने की ललक बढ़ी है। विद्यालय के शिक्षक नियमित रूप से इसकी कक्षा का संचालन करते हैं और कई गतिविधियों का आयोजन भी इसके तहत किया जाता है। इससे भविष्य में व्यावहारिक बदलाव देखने को मिलेंगे। बच्चों में जिम्मेदारी, निष्ठा, ईमानदारी जैसे मूल्यों को यह विषय-वस्तु सिंचित करती है। इसे अगर और भी रोचक बनाया जा सके, तो बच्चे खेल-खेल में भी मूल्यों को सीख सकेंगे।"

श्री धनीराम कुशवाह
प्राचार्य
सान्दीपनि विद्यालय नरवर
जिला- शिवपुरी

“मूल्य जीवन का आधार हैं। इस सत्य को अनेक महापुरुषों ने समय-समय पर प्रतिपादित किया है। मूल्यों को समझकर उनके अनुरूप जीवन जीने से न केवल स्वयं का सुख सुनिश्चित होता है, बल्कि समाज में भी आनंद और सद्भाव का विस्तार होता है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि स्कूली शिक्षा को मानवीय मूल्य आधारित बनाने के उद्देश्य से यूएचवी टीम और राज्य आनंद संस्थान द्वारा मध्य प्रदेश के विद्यालयों में विद्यार्थियों को आनंद सभा के माध्यम से तथा शिक्षकों को यूएचवी की ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कार्यशालाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों को पहुंचाने की पहल की गई है। साथ ही ‘आनंद संचारिका’ मासिक पत्रिका के प्रकाशन से मूल्य शिक्षा के महत्व एवं प्रयासों को जन जन तक पहुंचाने का यह प्रयास निश्चय ही सराहनीय है। इस हेतु यूएचवी टीम और राज्य आनंद संस्थान की पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ, तथा आनंद संचारिका नामक ई-पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई।”

पवनेन्द्र कुमार,
असिस्टेंट प्रोफेसर,
मुरादाबाद इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी, मुरादाबाद (उ.प्र.)

“राज्य आनंद संस्थान की पहल वास्तव में सराहनीय है, क्योंकि यह केवल भौतिक विकास तक सीमित न रहकर लोगों के मानसिक संतुलन और खुशी पर भी ध्यान देती है। संस्थान द्वारा संचालित आनंद क्लब, योग-ध्यान गतिविधियाँ और “आनंदम” जैसे कार्यक्रम समाज में सहयोग, सकारात्मक सोच और आपसी जुड़ाव को बढ़ाने में प्रभावी साबित हो रहे हैं। साथ ही, यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूज के साथ मिलकर यह संस्थान स्कूल शिक्षकों तथा उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों को मानवीय मूल्यों पर आधारित प्रशिक्षण और अभ्यास प्रदान कर रहा है, जिससे वे अपने-अपने संस्थानों में विद्यार्थियों के बीच इन मूल्यों को प्रभावी ढंग से विकसित कर सकें। प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से लोगों को तनाव प्रबंधन, मानव मूल्यों और जीवन कौशल सिखाने का प्रयास भी काफी उपयोगी है। कुल मिलाकर, यह पहल एक खुशहाल, संतुलित और मूल्य-आधारित समाज के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक कदम प्रतीत होता है।”

नवीन शर्मा,
आईएमएस कॉलेज,
गाज़ियाबाद उ.प्र.

विशेष आलेख - अध्ययन एवं अभ्यास

(परिवार में व्यवस्था का आधार– संबंधों में भाव)

आनंद संचारिका के पिछले अंकों की चर्चा से स्पष्ट होता है कि स्वयं का वास्तविक विकास तभी संभव है जब हमारी कल्पनाशीलता, संबंध व्यवस्था और सह -अस्तित्व के अनुरूप हो। अस्तित्व स्वयं एक व्यवस्था है और उसे समझकर अपने भीतर व्यवस्था स्थापित करना ही स्वयं में विकास का आधार है। जब "जैसा मैं हूँ" और "जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है" के बीच एकरूपता स्थापित होती है, तब 'स्वयं(मैं)' में संगीत (हार्मनी) उत्पन्न होता है, जिसे हम सुख के रूप में अनुभव करते हैं; जबकि अंतर्द्वंद दुःख का कारण बनता है। समृद्धि का अर्थ केवल सुविधाओं का संग्रह नहीं, बल्कि अपनी वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान और उनसे अधिक की उपलब्धता का भाव है, जो सही समझ और सही हुनर के संतुलन से संभव होता है। इसी संदर्भ में, मानव को 'मैं' (चैतन्य इकाई) और 'शरीर' (जड़ इकाई) के सह-अस्तित्व के रूप में समझा गया है, जहाँ 'मैं' की आवश्यकता सुख है और 'शरीर' की आवश्यकता भौतिक सुविधाएँ हैं।

'मैं' की प्रमुख क्रियाएँ— इच्छा, विचार व आशा है जिसे हम कल्पनाशीलता के रूप में समझते हैं जो सभी व्यवहार और कार्यों का आधार है। जब कल्पनाशीलता सहज-स्वीकृति के अनुरूप होती है, तब 'मैं' में व्यवस्था और निरंतर सुख की स्थिति बनती है, जिससे व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति/अस्तित्व के चारों स्तरों पर व्यवस्था में जीना संभव होता है। इसी क्रम में, यह भी चर्चा हुई कि 'स्वयं (मैं)' ही दृष्टा, कर्ता और भोक्ता है— अर्थात् देखने, निर्णय लेने और सुख-दुःख का अनुभव करने वाला 'मैं' ही है, जबकि शरीर उसका साधन है। 'शरीर' एक स्व-व्यवस्थित प्रणाली है और 'मैं' की भूमिका उसके प्रति संयम, पोषण और सदुपयोग की जिम्मेदारी निभाने की होती है, जिससे दोनों के बीच संगीत (हार्मनी) बनी रहती है और स्वस्थ, और संतुलित जीना संभव हो पता है ।

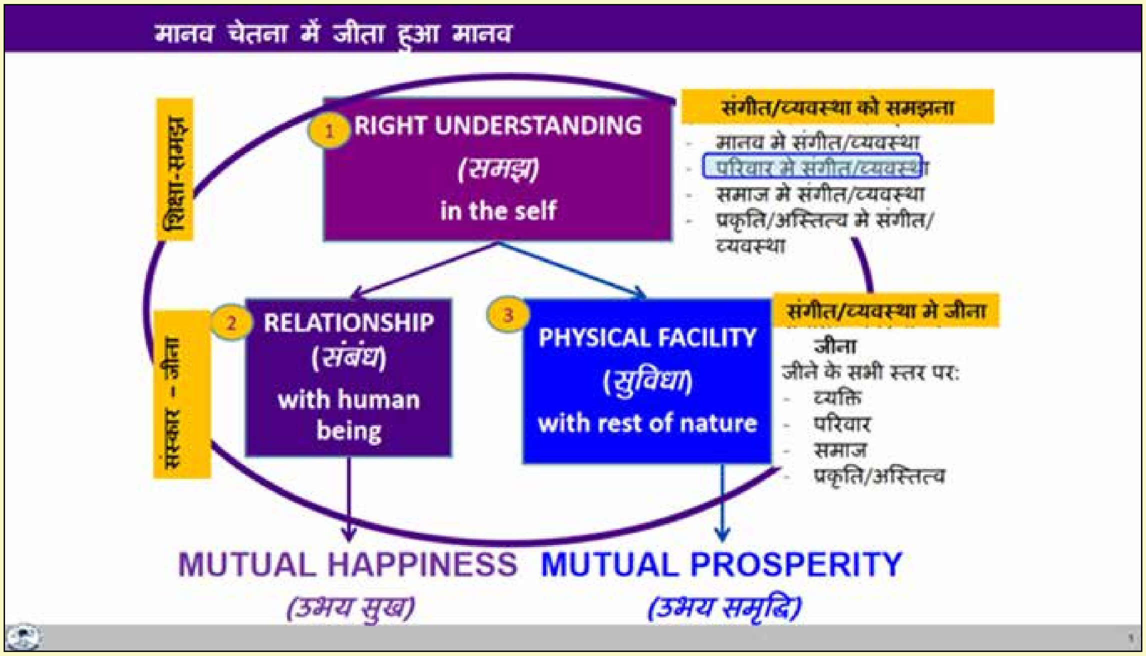

निरंतर सुख सुनिश्चित करने के लिए सही-समझ आवश्यक है, जिसका अर्थ है मानव, परिवार, समाज एवं प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था को समझना तथा उसके अनुरूप जीना। सही-समझ के आधार पर व्यक्ति को अपने 'मैं' तथा दूसरे के 'मैं' के बारे में स्पष्टता मिलती है, जो संबंधों को समझने का आधार है। इसी आधार पर परिवार में व्यवस्था को समझने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है, जिसका विस्तार से अध्ययन, इस अंक में किया जाएगा।

परिवार मानव-मानव परस्परता में जीने की मूल इकाई है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति जन्म लेता है तथा जीवन की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करता है। यहीं हम साझा करना, एक-दूसरे की देखभाल करना और संबंधों के भाव को समझते-सीखते हैं। परिवार में ही हमारे संस्कारों और संबंधपूर्वक जीने की योग्यता का विकास होता है। इस प्रकार, 'परिवार' मानव संगठन की मूल इकाई होने के साथ व्यवस्था और संबंध में जीने की अभ्यास स्थली भी है। परिवार में व्यवस्था का मूल आधार सदस्यों के बीच संबंधों का सही निर्वाह है। संबंधों का सही निर्वाह तभी संभव है जब हम संबंध को ठीक से समझें।

संबंध को समझने के लिए चार महत्वपूर्ण पहलुओं को जानना आवश्यक है— पहला, संबंध एक 'स्वयं(मैं$_1$)' और दूसरे 'स्वयं(मैं$_2$)' के बीच होता है; दूसरा, संबंधों में भाव एक 'मैं' में दूसरे 'मैं' के लिए होते हैं; तीसरा, इन भावों को पहचाना जा सकता है क्योंकि ये निश्चित होते हैं; और चौथा, इन भावों का सही निर्वाह और मूल्यांकन होने पर उभय-सुख अर्थात् दोनों के सुख की स्थिति बनती है। जब हम इन पहलुओं को समझते हैं तो परिवार में संबंधों को सही ढंग से जीने की दिशा स्पष्ट होती है।

सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि संबंध पहले से ही विद्यमान हैं; हमें उन्हें बनाना नहीं होता, बल्कि केवल पहचानना और समझना होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार, रिश्तेदारों, पड़ोसियों, मित्रों और समाज के अनेक लोगों से पहले से ही जुड़ा हुआ है। यहाँ तक कि जिन वस्तुओं और सेवाओं का हम उपयोग करते हैं, वे भी अनेक लोगों के सहयोग से हम तक पहुँचती हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि हम अनगिनत लोगों से परस्पर रूप से जुड़े हुए हैं। इसलिए संबंध, मानव जीवन का स्वाभाविक और अनिवार्य अंग हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि संबंध वास्तव में एक 'मैं' और दूसरे 'मैं' के बीच होते हैं, न कि केवल शरीरों के बीच। 'मैं' ही संबंध को समझता है, उसे स्वीकार करता है और उसका निर्वाह करता है, जबकि शरीर इस निर्वाह के लिए एक साधन के रूप में कार्य करता है। यदि हम मानव को केवल शरीर के रूप में देखते हैं, तो संबंधों को सही रूप में समझना और उनका सही निर्वाह करना कठिन हो जाता है।

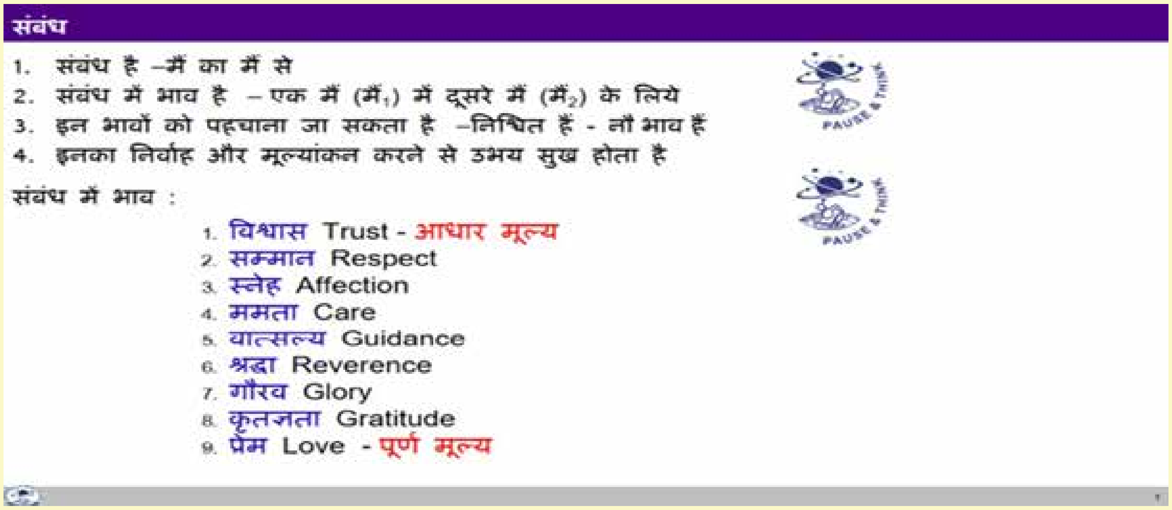

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि संबंधों का केंद्र भाव होता है। भाव 'मैं' में होते हैं, शरीर में नहीं। सम्मान, स्नेह, ममता जैसे भाव संबंधों को जीवंत और सार्थक बनाते हैं, जो भौतिक सुविधाओं के आदान-प्रदान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। उदाहरण के लिए, जब माँ स्नेह और ममता के साथ भोजन बनाती हैं, तो वही साधारण भोजन भी हमें अधिक संतोष और खुशी देता है, जबकि वही भोजन किसी अन्य स्थान पर वैसा अनुभव नहीं देता। इसका कारण यह है कि संबंधों में भाव का महत्व भौतिक वस्तुओं से अधिक होता है। आज संबंधों में जो समस्याएँ दिखाई देती हैं, उनका मुख्य कारण यह है कि हम 'मैं' और उसमें होने वाले भावों को ठीक से नहीं समझ पाते और संबंधों को केवल भौतिक आधार पर निभाने का प्रयास करते हैं।

तीसरा पहलू यह है कि संबंधों में होने वाले भाव निश्चित होते हैं और उन्हें पहचाना जा सकता है। संबंधों में नौ प्रमुख भाव या मूल्य हैं—विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, वात्सल्य, श्रद्धा, गौरव, कृतज्ञता और प्रेम। ये सभी भाव मानव को सहज रूप से स्वीकार्य होते हैं। उदाहरण के लिए, हम सहज ही देख सकते हैं कि विश्वास, सम्मान और स्नेह जैसे भाव हमें स्वीकार्य हैं, जबकि अविश्वास, अपमान और द्वेष जैसे भाव असहज लगते हैं। जब 'मैं' में सहज स्वीकार्य भाव होते हैं, तब व्यक्ति अपने भीतर व्यवस्था और संतुलन का अनुभव करता है, जिससे सुख की स्थिति बनती है। इसके विपरीत, जब 'मैं' में अपमान या द्वेष जैसे भाव होते हैं, तब व्यक्ति के भीतर अंतर्विरोध उत्पन्न होता है और वह असहज तथा दुखी अनुभव करता है।

चौथा और अंतिम पहलू यह है कि जब इन भावों का सही निर्वाह और सही मूल्यांकन होता है, तब उभय-सुख अर्थात् दोनों पक्षों का सुख सुनिश्चित होता है। जब 'मैं' में विश्वास, सम्मान या स्नेह का भाव होता है और उसे हम दूसरे के साथ व्यक्त करते हैं, तो इससे न केवल हमें सुख मिलता है बल्कि दूसरे व्यक्ति को भी सुख का अनुभव होता है। इसी प्रकार, जब दूसरा व्यक्ति भी इन भावों को पहचानता और स्वीकार करता है, तब संबंधों में परस्पर संगीत (हार्मनी) स्थापित होता है। संबंधों में मूल्यांकन इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि हम यह जाँच सकें कि हमारे भीतर ये भाव वास्तव में हैं या नहीं, हमने उन्हें दूसरे तक ठीक से व्यक्त किया या नहीं, और क्या उनके परिणामस्वरूप दोनों के लिए सुख की स्थिति बनी या नहीं।

इस प्रकार, परिवार में व्यवस्था बनाए रखने के लिए संबंध के इन चारों पहलुओं— संबंध की पहचान, भावों की समझ, भावों की निश्चितता तथा उनके निर्वाह और मूल्यांकन—को समझना और सुनिश्चित करना आवश्यक है। जब इन बातों की स्पष्टता होती है, तब हम संबंधों को सही रूप में स्वीकार कर पाते हैं और उनमें भावों का निर्वाह कर पाते हैं। यही सही-समझ परिवार में संगीत (हार्मनी) और उभय-सुख का आधार बनती है।

उपरोक्त सभी बिंदुओं पर निरंतर अध्ययन एवं अभ्यास जारी रखने के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। अगले अंक में हम इस चर्चा को और गहराई से आगे बढ़ाएँगे।

मेरी यूएचवी यात्रा...

कौशल किशोर बुटोलिया
रिटायर्ड आफिसर - इंडियन एयरफोर्स
यूएचवी वॉलंटियर, ग्वालियर

मैं कौशल किशोर बुटोलिया ग्वालियर में निवास कर रहा हूँ और मूलरूप से जिला जालौन उत्तर प्रदेश का निवासी हूँ। परिवार में पत्नि घर की व्यवस्था संभालती हैं। पुत्र मनोरोग विशेषज्ञ है एवं ग्वालियर मानसिक आरोग्यशाला में सह-प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत है। पुत्रवधु एम. फिल. इन सायकेट्रिक सोशल वर्क से है। वह दोनों मनोरोग से जुड़ी समस्याओं पर कार्य कर रहे हैं। मेरी नौकरी इंडियन एयरफोर्स में 1975 से1996 तक रही। मैंने 1996 में स्वेच्छा से जनरल वारंट ऑफिसर के पद से एयरफोर्स छोड़ दी थी। उसके बाद मैंने प्राइवेट सेक्टर में काम किया, एक प्रोफेशनल कॉलेज में डायरेक्टर के रूप में काम किया। एयरफोर्स में एक व्यवस्थित जीवन शैली के बाद बाहर समाज में बहुत अव्यवस्था दिखी, मेरे मन में यह विचार चल रहा था कि इस अव्यवस्था को सुधारने में मैं क्या योगदान दे सकता हूँ। इसी बीच मेरा जुड़ना राज्य आनन्द संस्थान से हुआ।

मेरी UHV यात्रा जुलाई 2021 में ऑनलाइन सत्र से शुरू हुई, जिसे राज्य आनन्द संस्थान ने मास्टर ट्रेनर्स के लिए रखा था। इसमें सबसे मुख्य बात जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया कि जो भी कहा जा रहा है वह 'प्रस्ताव' है इसे 'माने नहीं जाँचे' अपने स्वयं के आधार पर अपनी सहज-स्वीकृति के आधार पर। तब से आज तक मैं नियमित रूप से सुबह के अभ्यास सत्र से जुड़ता हूँ।

यदि स्वयं में हुये परिमार्जन को देखें तो मुख्य रूप से कुछ वास्तविकताओं पर ध्यान गया है। वह जैसी हैं वैसा कुछ हद तक देख पा रहा हूँ। संबंध, व्यवस्था व सहअस्तित्व की कुछ-कुछ समझ बनने लगी है तथा स्वयं में एक सहजता व स्थिरता दिखने लगी है। गति धीमी है पर स्वयं व्यवस्था में जीना व संयमित जीवन शैली अपनाने में बहुत मदद मिली है। बाहर जिम्मेदारी के साथ प्रस्तुत होने लगा हूँ। सहभागिता को देखें तो स्कूल एजुकेशन में शिक्षकों की ट्रेनिंग, स्वयं व टीम के विकास के लिए आयोजित साप्ताहिक मीटिंग में सहभागिता करना। जहां भी मैं अपने को सक्षम पाता हूँ, सहभागिता करने का प्रयास करता हूँ। इस यात्रा में, मेरी समझ बढ़ाने में बहुत सारे लोगों का योगदान रहा है उन सब के प्रति कृतज्ञता।

प्रतिभागियों के स्वमूल्यांकन

"मैं जून 2023 में भोपाल में "सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों" की 6 दिवसीय कार्यशाला में आनंद संस्थान से परिचित हुई और आनंद की यात्रा प्रारंभ हुई। इसने मेरे जीवन में सोचने-समझने का दृष्टिकोंण बदल दिया। प्रशिक्षण के पूर्व मैं अधिकारों को ही सुख मानती थी, कर्तव्य और संबंधों का महत्व नहीं समझती थी। पहले मैं स्वयं को न देखती और न ही समझने का प्रयास करती, केवल दूसरों का मूल्यांकन करती थी, जिससे क्रोध और मानसिक तनाव की स्थितियां निर्मित होती थी किन्तु आज मैं स्वयं के साथ-साथ दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को भी समझने मूल्यांकन करने का प्रयास करती हूँ। अतः आज स्वयं के विचारों में परिवर्तन देख पा रही हूँ, जिससे हमारे परिवार के सदस्यों, संबंधियों व विद्यालय में अन्य साथियों के साथ संबंधों में आत्मविश्वास, मधुरता व सुख का अनुभव कर पा रही हूँ। मेरी सहभागिता यह है कि बच्चों में मानवीय मूल्यों की समझ बढ़ाने का प्रयास कर रही हूँ। शनिवार व गुरुवार की मीटिंग में जुड़कर स्वयं में समझ बढ़ाने का प्रयास कर रही हूँ। पिछले तीन वर्षों में मई व जून की कार्यशालाओं में वालंटियर के रूप में सहयोग किया है और इस वर्ष भी कार्यशाला में सहयोग करने का पूरा प्रयास करूंगी।"

विजय लक्ष्मी चौरेसिया, *सांदीपनि स्कूल श्री मिलन सिंह गहरवार शा. उ. मा.वि. रघुराजगढ़, जिला-रीवा*

"यूएचवी की विषय-वस्तु से अभी तक जो समझ मुझमें बन पाई है उसके परिणामस्वरूप मेरे जीने में सहजता आई है। 'स्वयं' को 'शरीर' से अलग देखने की समझ विकसित हुई। वर्तमान में दोनों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए अलग-अलग कार्यक्रम बनाने का प्रयास रहता है। मेरा ध्यान मेरी कल्पनाशीलता पर बना रहता है। पहले जब विरोध का भाव आता था, तभी कल्पनाशीलता पर ध्यान जाता था और सहज स्वीकृति को समझ पाते थे, परंतु अभी अन्य समय में भी ध्यान जाने लगा है। पहले आवेश और सुख समान लगता था, लेकिन जब थोड़ा और ध्यान दिया, तो यह देख पाए कि आवेश भी एक असहजता है। परिवार के स्तर पर भी भावपूर्वक जीने का प्रयास रहता है। कभी जब कल्पनाशीलता में विरोध का भाव दिखने लगता है तो उसे ठीक करने का प्रयास करते हैं और भाव स्थिर बना रहे, ऐसा प्रयास करते हैं। विद्यालय में बच्चों के बीच रहते हुए मैंने बहुत सारे परिवर्तन स्वयं में महसूस किए हैं। इस कंटेंट से पहले, मुझे बच्चे छोटे ही लगते थे। लगता था कि कोई बात समझने के लिए अभी समय है, अभी से क्या समझ पाएंगे लेकिन, अब जब ये समझ बनी कि 'मैं' के स्तर पर सभी का लक्ष्य और क्षमता एक जैसी है, तो निर्वहन का कार्यक्रम भी उसी तरह बनाने का प्रयास करते हैं। कई बार जब उनकी योग्यता पर ध्यान जाता है तो उसे बढ़ाने का कार्यक्रम भी बनाते हैं। कोशिश रहती है कि उन तक बात प्रस्ताव के माध्यम से ही पहुंचे। अपनी समझ को व्यवस्था के सभी स्तर पर मानव, परिवार, समाज और प्रकृति के स्तर पर व्यवस्था के अनुसार जीने का कार्यक्रम बना सकूँ, उसके लिए UHV की विषय-वस्तु और उसके कार्यक्रम बहुत सहायक होते हैं। पूरी UHV टीम और राज्य आनंद संस्थान का बहुत आभार।"

योगिता रावत, *शा. सान्दीपनि विद्यालय नरवर, जिला-शिवपुरी)*

“सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों (UHV) ने मेरे जीवन को समझने और जीने के दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन किया है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से मैंने स्वयं का मूल्यांकन किया, जिससे मेरी समझ- संबंधों, सुविधाओं, पारिवारिक मूल्यों और समाज के प्रति जिम्मेदारी अधिक स्पष्ट हुई। अब मैं निर्णय भावनाओं के बजाय सही-समझ के आधार पर लेने का प्रयास करती हूँ। संबंधों में विश्वास, सम्मान और स्वीकार्यता का महत्व समझ में आया है, जिससे रिश्तों में मधुरता बढ़ी है। सुविधाओं के प्रति भी मेरा दृष्टिकोण बदला है— अब मैं आवश्यकता और लालसा के अंतर को समझते हुए सीमित संसाधनों में संतोष का अनुभव करती हूँ। परिवार को मैं मूल्यों की पहली पाठशाला मानती हूँ, जहाँ संवाद, सम्मान और सहयोग महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी समझते हुए सहयोग और परस्पर विश्वास के मूल्यों को अपनाने का प्रयास करती हूँ। इस प्रकार यूएचवी ने मेरे विचारों में स्पष्टता, संबंधों में स्थायित्व और जीवन के प्रति संतुलित दृष्टि विकसित की है।”

रंजना मालवीय, *शा. हाई स्कूल देवनखेड़ी, उज्जैन*

“मेरी इस जीवन यात्रा को और अधिक सरल सहज बनाने में यूएचवी का योगदान भरपूर मिल रहा है। वर्तमान में मेरी यूएचवी यात्रा ने इस पथ पर चार साल पूरे किए हैं जिसमें स्वयं को अस्तित्व के साथ जुड़ा हुआ देख पाता हूँ, वहीं स्वयं का स्वयं से संवाद स्पष्ट एवं सहज हो पाया है। अब कुछ हद तक मनमानी की जगह सहज-स्वीकृति से निर्णय ले पाता हूँ। स्वयं के बिगड़ते हुए भावों को ठीक करने में गति कर पाया हूँ। स्वयं में स्थिरता के साथ निर्णय लेने की कुछ योग्यता का विकास हुआ है। अब अपने सुख-दुख लिए, मैं स्वयं को जिम्मेदार के रूप में देख पाता हूँ। मेरी समझ के विकास के क्रम में स्वयं को एक पूर्ण मानव के रूप में तैयार कर पाऊं, इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु चारों स्तर की व्यवस्था को समझने एवं जीने का कार्य कर रहा हूँ।”

बसंत कुमार सेन, *उच्च माध्यमिक शिक्षक, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पीपलखेड़ा, जिला- विदिशा*

“हर मानव का लक्ष्य एक ही है- यह मैं यूएचवी से जुड़कर ही पहचान पाया और उसको ज्ञान (अस्तित्व दर्शन, जीवन और मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान), विवेक और विज्ञान (समझ) पूर्वक पाने की विधि और क्रम को भी पहचान पाया। इसी क्रम में मेरी योग्यता पर काम करके, संबंधों को पहचान कर, ‘मानवीयता पूर्वक मानव सुखी होता है और समझ पूर्वक ही सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी कर पाता है’, यह मैं पहचान पाया। इससे मुझमें और परिवार में तृप्ति का स्तर बढ़ता देख पाया। अब निरंतर तृप्ति की ओर एवं सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी की ओर मेरी गति बनी है और मुझे विश्वास है कि इसे हर मानव प्राप्त कर सकता है।”

डॉ. विलास वरुडकर, *प्रोफेसर, मौलाना आज़ाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MANIT), भोपाल*

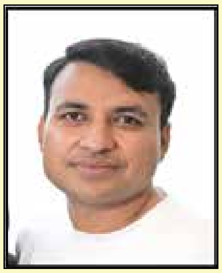

“राज्य आनन्द संस्थान द्वारा सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित 03 दिवसीय कार्यशाला में सम्मिलित होने का अवसर मिला। कार्यशाला ने मेरे सोचने और समझने के नजरिए को बदला है। 'सुख' और 'सुविधा' के बीच के अंतर को समझना मेरे लिए आँखें खोलने जैसा अनुभव रहा। इस कार्यशाला को सहज-स्वीकृति के साथ जीना व्यवहार में खुद-ब-खुद झलकता है एवं खुद पर विश्वास बढ़ता जाता है और जीवन संगीत में अर्थात लयबद्ध होता हैं जिससे जीवन मे जागरूकता बनी रहती हैं। आज के दौर में जहाँ तेजी से प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, कोई पद के लिए, कोई पैसौं के लिए तो कोई रुतबे के लिए बिना समझे दौड़ रहा है, जबकि जागरूकता के साथ दौड़ना ज्यादा ठीक है। ऐसे समय मे मुझे 'स्वयं' को समझने और 'परस्पर संबंधों' में सद्भाव बनाए रखने का जो दृष्टिकोण यूएचवी कार्यशाला के माध्यम से मिला, वह अतुल्य है। विशेष रूप से 'सही समझ' और सहज स्वीकृति ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। एक जागरूक इंसान के रूप में, अब मैं परिवार, समाज और प्रकृति के साथ केवल बाते ही नहीं, बल्कि जीवन मे नैतिक मूल्यों को भी बेहतर तरीके से व्यवहार में जीना समझ के साथ साझा कर सकूंगा।

UHV कार्यशाला जीवन जीने के प्रति जागरूकता पैदा करती हैं। इसे कॉलेज के छात्रों के लिए एक विषय के रूप में अनिवार्य करना चाहिए जिससे वह स्वयं, परिवार, समाज को बेहतर समझ सके। क्योंकि आज की नई पीढ़ी में बच्चों की परवरिश शिक्षा और स्वास्थ्य पर फोकस हैं न कि नैतिक मूल्यों पर। आज की पीढ़ी के लिए यह कार्यशाला होनी चाहिए जिससे युवा वर्ग अवसाद की और न बड़े अपने लक्ष्यों को सही से पहचान कर पाए कि मैं क्या होना चाहता हूँ न कि बनना चाहता हूँ।”

राज्य आनंद संस्थान और मार्गदर्शकों का हृदय से आभार।”

विनोद धाकड़, *मंत्रालय म. प्र. शासन, भोपाल*

आरएएस-यूएचवी के इस माह के कार्यक्रम

क्र.	दिनाँक	कार्यक्रम	कार्यक्रम स्थल
1	09 से 14 मार्च 2026	फैकल्टी डेवलपमेंट, यूएचवी रिफ्रेशर छः दिवसीय कार्यशाला (उच्च शिक्षा)	संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क, भोपाल
2	09 से 13 मार्च 2026	आनंद की ओर" UHV-II पांच दिवसीय कार्यशाला	RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी, भोपाल
3	20 मार्च 2026	"आनंद के आयाम" राष्ट्रीय संगोष्ठी	स्वर्ण जयंती सभागार, RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी, भोपाल

कार्यशाला का नाम : फैकल्टी डेवलपमेंट UHV रिफ्रेशर छः दिवसीय कार्यशाला

दिनांक : 09 से 14 मार्च 2026

स्थान : संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क, भोपाल

दिनाँक 09 से 14 मार्च 2026 संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क भोपाल में फैकल्टी डेवलपमेंट (उच्च शिक्षा विभाग) रिफ्रेशर, (छह दिवसीय)कार्यशाला का आयोजन श्री भानु प्रताप सिंह जी के प्रबोधन में किया गया। इसमें शासकीय महाविद्यालयों के कुल 43 प्राध्यापकों ने सहभागिता की। सभी प्रतिभागियों ने उच्च शिक्षा में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के समावेश की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया। सभी का ध्यान शिक्षा-संस्कार की भूमिका, समझ-सम्बन्ध-सुविधा पर गया। मानव में व्यवस्था के अंतर्गत शरीर और स्वयं (मैं) की अलग-अलग आवश्यकताओं और क्रियाओं पर ध्यान गया। परिवार में संबंधों की समझ में निहित मूल्यों- विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, वात्सल्य, श्रद्धा, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम आदि मूल्यों पर सभी का ध्यान गया। विषय-वस्तु के अनिवार्यता को देखते हुए अनेक लोगों ने समाज में भागीदारी करने का भी मन बनाया।

कार्यशाला का नाम : "आनंद की ओर" UHV-II पांच दिवसीय कार्यशाला

दिनांक : 09 से 13 मार्च 2026

स्थान : RCVP नरोन्हा अकादमी, भोपाल

राज्य आनंद संस्थान द्वारा दिनाँक 09 से 13 मार्च 2026 को RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी, भोपाल में "आनंद की ओर" UHV-II पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 29 लोगों ने प्रतिभागिता की। इस कार्यशाला में उन्ही प्रतिभागियों को शामिल किया गया, जिन्होंने पूर्व में तीन दिवसीय आनंद की ओर कार्यशाला की हुई थी। इस कार्यशाला में सभी का ध्यान विषय-वस्तु की गहराई पर गया, साथ ही सभी ने जीने के स्तर पर आ रही व्यावहारिक बाधाओं पर भी गहराई से चर्चा की। संबंधों में बढ़ रही दूरियां, बच्चों में दिख रहा मूल्यों का ह्रास, समाज में शिक्षा-संस्कार की भूमिका, वैश्विक परेशानियों के चलते बढ़ रहे संकट और प्रकृति के संरक्षण/संवर्धन पर गहराई से ध्यान गया, साथ ही सह-अस्तित्व की वास्तविकता पर विस्तार से चर्चा हुई। इस

कार्यशाला में 18 लोगों ने समाज में भागीदारी के लिए मन बनाया और वॉलेंटियर के लिए अपना नाम दिया।।

कार्यशाला का नाम : “आनंद के आयाम” राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक : 20 मार्च 2026

स्थान : स्वर्ण जयंती सभागार, RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी, भोपाल

20 मार्च 2026 को विश्व खुशहाली दिवस पर राज्य आनंद संस्थान द्वारा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी "आनंद के आयाम" का आयोजन RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी के स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में पूरे देश के लगभग 800 बुद्धिजीवी व्यक्तित्व शामिल हुए, जिन्होंने आंतरिक आनन्द और आध्यात्मिक चेतना जाग्रत करने साथ अपने व्यक्तित्व और कृतित्व में समानता लाने, परिवार में संबंधों में समरसता लाने, समाज में अभय और प्रकृति का संरक्षण संवर्धन आदि विषयों अपने विचार साझा किए। राज्य आनंद संस्थान के सभी मास्टर ट्रेनर, आनंदक, आनंद क्लब, आनंद ग्राम एवं आनंद सभा सहयोगी साथियों ने सक्रियता से पूरे कार्यक्रम में भागीदारी की। आनन्द संस्थान के सभी सहयोगी सदस्यों में आपसी मेलमिलाप से उमंग-उत्साह और खुशियों का संचार हुआ।

स्नेह संचार सभा रिपोर्ट

कार्यक्रम का नाम : स्नेह संचार सभा

स्थान : डीडी नगर, ग्वालियर

उद्देश्य : यूएचवी (UHV) के सभी निष्ठावान एवं सक्रिय सदस्यों में मेल-मिलाप बढ़ाना, उनके परिवार के सदस्यों में आत्मीयता बढ़ाना, और संभाग-जिला-विद्यालय स्तर पर यूएचवी की विभिन्न गतिविधियों के लिए सीमाबंध धरातल निर्मित करना।

संभाग	स्थान	समय	सदस्य संख्या	राज्य आनंद संस्थान के प्रतिनिधि	अगली मीटिंग की तिथि
ग्वालियर	डीडी नगर ग्वालियर	8-03-2026	7	-	तय नही हुई

कार्यक्रम की प्रमुख उपलब्धियाँ:

- चर्चा के दौरान सभी ने साझा किया कि उन्होंने UHV की विषय-वस्तु को अपने जीवन में किस प्रकार अनुभव किया और उसे जीकर देखा।
- सभी ने अपनी-अपनी कमजोरियों और उन स्थितियों को खुले मन से साझा किया जहाँ जीवन में फँसावट महसूस हो रही है।
- प्रतिभागियों ने यह भी बताया कि वे एक-दूसरे के लिए किस प्रकार सहायक बन सकते हैं।
- सभी ने खुले मन से स्वीकार किया कि जीवन में बदलाव हो रहे हैं और वे समय रहते अपने उतार-चढ़ाव को स्पष्ट रूप से देख पा रहे हैं।
- यह मिलन बहुत ही सौहाद्रपूर्ण वातावरण में और बिना किसी औपचारिकता के संपन्न हुआ।

ग्वालियर संभाग (म.प्र.)

ऑनलाइन साप्ताहिक सभाएं

मंगलवार मीटिंग : स्वयं के विकास और समूह के विकास के संदर्भ में योजना कार्यक्रम बनाने, उनका क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन के आशय से प्रत्येक मंगलवार सांय 7:00 से 8:30 बजे तक एक ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया जाता है। इसमे लगभग 130 लोग नियमित रूप से जुड़ते हैं। प्रत्येक बुधवार को होने वाली इस संभागवार मीटिंग की रिपोर्ट संभाग स्तरीय कोर टीम द्वारा साझा की जाती हैं एवं मध्यप्रदेश में चल रहे यूएचवी के प्रयासों की समीक्षा की जाती है।

क्र.	मीटिंग दिनांक	24 फ़रवरी	10 मार्च	17 मार्च
1	कुल सदस्य	55	55	55
2	उपस्थित सदस्य	22	29	25

बुधवार मीटिंग : संभाग स्तर पर टीम को विकसित होने में सहयोग करने हेतु सात संभागों की ऑनलाइन साप्ताहिक मीटिंग का आयोजन प्रत्येक बुधवार को शाम 7 से 8:30 बजे तक किया जाता है। पाँच-सदस्यीय संचालन समिति अपने संभाग के लगभग 20-25 सदस्यों के साथ इस मीटिंग को संचालित करते हैं। इसमे स्वमूल्यांकन एवं विषयवस्तु की प्रस्तुति के साथ ही आगामी बुधवार मीटिंग की कार्ययोजना पर भी चर्चा की जाती है। संभाग गाइड द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। इस मीटिंग की रिपोर्ट अगले मंगलवार की मीटिंग में प्रस्तुत की जाती है।

संभागवार (बुधवार मीटिंग) स्व-मूल्यांकन रखने वाले सदस्यों का विवरण

	ग्वालियर	रीवा	इंदौर	उज्जैन	सागर	भोपाल	जबलपुर
मीटिंग दिनांक	कम्बाइन्ड मीटिंग (11 मार्च 2026)						
प्रस्तुतकर्ता			गणेश जी	सुनील पाटीदार जी			
मीटिंग दिनांक	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च
प्रस्तुतकर्ता	विश्व नाथ सिंह	पूनम शुक्ला जी	काजल इंदौरे जी पूजा जी	महेश मकवाना जी	संतोष जी, अंजू देवी जी	सुभाषिनी जी, बसंत सेन जी	पूनम मालवीय, साक्षी सहारे
मीटिंग दिनांक	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च
प्रस्तुतकर्ता	प्रशांत गौर जी	सुषमा जी, विपिन जी	महर्षि जी मीनाक्षी जी	प्रीति बाला जी	रामकेश टेकाम जी, कीर्तिमान शुक्ला जी	महेंद्र तोमर जी	प्रीति दुबे जी, दुर्गा प्रसाद जी

संभागवार (बुधवार मीटिंग) प्रस्तुतकर्ताओं का विवरण

	ग्वालियर	रीवा	इंदौर	उज्जैन	सागर	भोपाल	जबलपुर
मीटिंग दिनांक	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च	18 मार्च
प्रस्तुतकर्ता	संभाग गाइड	संभाग गाइड	संभाग गाइड	संभाग गाइड	संभाग गाइड	संभाग गाइड	संभाग गाइड
मीटिंग दिनांक	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च	25 मार्च
प्रस्तुतकर्ता	अल्का चतुर्वेदी भारती शाक्य	परवीन खान जी	महर्षि जी काजल इंदौरे जी	सुनील पाटीदार जी	प्रेमलता जी, रविशंकर जी	प्रीतेश जी, आशा जी	रितुराज जी, दीप्ति ठाकुर जी

शुक्रवार मीटिंग : मध्यप्रदेश के समस्त आनंद सभा प्रशिक्षित शिक्षकों के साथ प्रत्येक शुक्रवार को सांय 6:00 से 7.30 बजे तक एक ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया जाता है। शास. सांदीपनि उ. मा. विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार को होने वाली 'आनंद-सभा' की विषय-वस्तु पर शिक्षकों में स्पष्टता एवं गहराई लाने के आशय से मुख्य प्रबोधक द्वारा चर्चा की जाती है। इसके साथ ही शिक्षकों की शंकाओं का समाधान भी किया जाता है। शनिवार को अपने-अपने विद्यालय में छात्रों के साथ आनंद सभा का संचालन हेतु उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। इस मीटिंग मे लगभग 700 शिक्षकों के साथ संवाद किया जाता है।

उपस्थिति एवं प्रस्तुतकर्ता का विवरण (शुक्रवार)

क्र.	मीटिंग दिनांक	27 फरवरी	06 मार्च	13 मार्च	20 मार्च
1	**उपस्थित सदस्य**	175	150	146	109
2	**विषय-वस्तु**	स्वास्थ्य एवं समृद्धि	परिवार में व्यवस्था	परिवार में व्यवस्था	रीकैप
3	**प्रबोधक**	कौशल बुटोलिया जी	पवनेन्द्र जी	कौशल बुटोलिया जी	पवनेन्द्र जी

आरएएस-यूएचवी के आगामी कार्यक्रम व योजनायें

क्र.	दिनाँक	कार्यक्रम	कार्यक्रम स्थल
1	23 से 28 मार्च 2026	फैकल्टी डेवलपमेंट कार्यशाला	CAPT कोकता, भोपाल
2	03 से 05 अप्रैल 2026	यूएचवी टीम डेवलपमेंट प्रोग्राम	राज्य आनंद संस्थान, भोपाल
3	06 से 08 अप्रैल 2026	आनंद की ओर तीन दिवसीय कार्यशाला	RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी , भोपाल

प्रदेश से बाहर यूएचवी के प्रयास

S. No.	PROPOSED START DATE	PROPOSED END DATE	TYPE OF FDP	MODE	FULL NAME OF INSTITUTE
1	9-Mar-2026	13-Mar-2026	UHV-II (5-day)	Offline	JB Institute of Technology, Dehradun, Uttarakhand
2	9-Mar-2026	13-Mar-2026	Introductory (5-day)	Online	AICTE Induction Portal
3	16-Mar-2026	20-Mar-2026	Introductory (5-day)	Online	AICTE Induction Portal
4	19-Mar-2026	21-Mar-2026	UHV-I (3 day)	Offline	Panjab University, Chandigarh
5	19-Mar-2026	21-Mar-2026	UHV-I (3 day)	Offline	Sri Manakula Vinayagar Engineering College, Puducherry
6	22-Mar-2026	29-Mar-2026	Parichay Shivir (Level-I)	Offline	Mulya-Shiksha Sansthan, Kanpur, Uttar Pradesh
7	30-Mar-2026	3-Apr-2026	UHV-II (5-day)	Offline	UP Institute of Design, Noida, Uttar Pradesh

यूएचवी छात्रों की दृष्टि में

"हमने आनन्द-सभा की कक्षा में बहुत कुछ सीखा है। पिछले वर्ष कक्षा 10 में UHV हमें पढ़ाया गया था। कक्षा में हमने बहुत कुछ सीखा। जैसे- मानव शरीर और मैं के सह-अस्तितव के रूप में है। पहले मुझे सिर्फ शरीर का ही ध्यान रहता था लेकिन अब "मैं" की समझ भी हुई है, हमारे लिए संबंध कितने महत्वपूर्ण हैं यह भी हमारी UHV कक्षा से ही जाना है, सदुपयोग पर भी बराबर ध्यान गया है। अब मैं अनावश्यक वस्तुओं के लिए अपने घरवालों को परेशान नहीं करती हूँ, हमे स्पष्टता से अपनी बात करनी चाहिए, न कि भय से इस बात को भी अब में समझने लगी हूँ।"

अक्षरा पंवार, कक्षा- 10वीं, सांदीपनी विद्यालय घटिया, जिला-उज्जैन

"हमने UHV की कक्षा में यह सीखा कि हमें किसी बात को मानने से पहले किसी बात को जाँचना चाहिए इस बात पर मेरा ध्यान गया है, किसी भी बात की अपनी समझ के आधार पर जाँचती हूँ। मेरा संबंधो पर भी ध्यान गया है, कक्षा में हमें अपने माता-पिता का आदर करना चाहिए, ये बात को मैं समझ पायी हूँ, क्योंकि माता-पिता एवं शिक्षक कभी भी हमारा बुरा नहीं चाहते हैं। अब मेरा सही बातों पर ध्यान जाने लगा है, मैं सभी शिक्षकों एवं हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ संबंध पूर्वक रहना सीख पायी हूँ। साथ ही निरंतर सुख वाली बात पर भी मेरा ध्यान गया है।"

तनु काशी, कक्षा - 9वीं, सांदीपनि विद्यालय घटिया, जिला-उज्जैन

"जिस दिन से मैनें UHV की क्लास में जाना शुरु किया है। तब से मेरी जीवनशैली में बहुत सारे बदलाव आये हैं UHV की कक्षा के कारण ही मुझे शांति का अनुभव हुआ, मेरा मन शांत रहने लगा है बातें और बेहतर समझ आने लगी हैं। UHV की कक्षा से ही मैंने एकता, सदाचार, ईमानदारी, स्वतंत्रता, आत्मविश्वास, मदद और सच का का साथ देने जैसे मानवीय गुणों को सीखा। UHV क्लासेस से हमने धैर्य रखना, सहानुभूति, दूसरों का आदर करना, आत्मानुशासन बनाए रखना, परोपकार की भावना रखना, अपने माता-पिता और गुरुजनों का आदर करना व उनकी बात मानना आदि बहुत कुछ सीखा। इससे हमें प्राकृतिक स्त्रोतों को, अपने पर्यावरण को, नदियों को, पहाड़ों को स्वच्छ व संरक्षित रखने की सीख मिली। हमें दूसरे जीवों के प्रति करुणा की भावना रखनी चाहिए और जरूरतमन्दों की सदैव सहायता करनी चाहिए। हमें कभी किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। हमें अपनी भावनाओं और गुस्से को नियंत्रित करना चाहिए और अगर कोई आपके बारे में कुछ बुरा कहे तो उसे अनदेखा करना चाहिए। हमें पर्यावरण सुरक्षा के प्रति सदैव गंभीर रहना चाहिए। UHV क्लासेस से हमारा जीवन बेहतर हो गया है इससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला. उपरोक्त सभी बातो का प्रभाव मेरे जीने में भी दिखने लगा है।"

अनुराधा पटेल, कक्षा- 9वीं सांदीपनि विद्यालय MLB नंबर 1 स्कूल, जिला-सागर

"सार्वभौमिक मूल्यों से आनंद की ओर आनंद सभा का नाम ही है आनंद की सभा, हमें आनंद सभा में यह बताया गया है कि हमें हमेशा होश में व खुश रहना चाहिए क्योंकि कभी-कभी हमें पता नहीं रहता और हम गलत कार्य करने लगते हैं अगर हम समझकर कार्य करेंगे तो हमें पता चलेगा कि कौनसा कार्य सही है और कौनसा कार्य गलत है अगर हम सही कार्य करेंगे तो हम खुद भी खुश रहेगें और हमें देखकर हम से छोटे भी यही सीखेंगे मैं इस बात को बहुत अच्छे से समझ पायी हूँ हमें आनंद सभा में यह भी बताया गया है कि हमें अगर किसी व्यक्ति ने कुछ बुरा कहा है तो हमें उसकी बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए क्योंकि हमें दुनिया में बहुत ऐसे व्यक्ति मिलेंगे तो क्या हम एक-एक की बातों पर ध्यान देंगे हमें यह भी सिखाया जाता है कि हमें निरंतर सुखी रहना चाहिए मेरा स्वयं निरंतर सुखी रहने वाली बात बहुत गहराई से समझ पायी हूँ क्योंकि अमीर हो या गरीब सब यही चाहते हैं कि वह निरंतर सुखी रहे और आज के समय में सबको खुश रहने के लिए पैसो की आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान में लोगों को दिखावा करना ज्यादा पसंद हैं जो कि गलत हैं हमें निरंतर सुख बिना उपभोग की वस्तुओं के भी प्राप्त हो सकता हैं. हम सब तृप्ति पूर्ण जीना चाहते है जिसमें हर क्षण सुख हो आनंद हो इसके लिए हमें हर समय होश में व खुश रहना होगा।"

ममता कुंवर , कक्षा- 10वीं, एकीकृत शासकीय हाई स्कूल धन्धौड़ा, जिला-मंदसौर

"मेरे जीवन में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की कक्षा से मेरा बहुत विकास हुआ है। जीवन में समझ, संबंध, व सुविधा पर अपना ध्यान दे पा रही हूँ। पहले मैं अपने दोस्तों पर बात-बात पर नाराज हो जाती थी लेकिन अब मैं ऐसा नहीं करती हूँ मैं आप समझ पाती हूँ कि वह मेरे लिए अच्छा ही सोचते हैं। अब मैं अपने माता-पिता की, टीचर की भी बात मानने लगी हूँ और वह जब मुझे डांटते हैं, काम की बोलते हैं तो मुझे उन पर गुस्सा नहीं आता और जो मुझसे बोलते हैं मैं वही काम आराम से खुश होकर करती हूँ। धन्यवाद।"

लक्ष्मी पुरी, कक्षा- 10 वीं, शासकीय उ. मा. वि. कालीपीठ, जिला-राजगढ़

"आनंद सार्वभौमिक मानवीय मूल्य की कक्षा लेकर मेरे जीवन में बहुत सारा सुधार हुआ है। अब मैं समझ पाती हूँ कि मैं और शरीर दो अलग-अलग ईकाइयों का सह अस्तित्व है और दोनों की आवश्यकता अलग-अलग है और शरीर की आवश्यकता सीमित है, लेकिन हमारा ध्यान शरीर की आवश्यकता पूरा करने में लगा रहता है। पहले मैं यह सोचती थी कि भौतिक सुविधाओं से हमारा सम्मान होता है और मैं उसी के बारे में सोच कर दुखी होती रहती थी। अब मुझे समझ में आ गया है कि यह सब शरीर की आवश्यकता है। सुख तो सही समझ सही भाव से ही हमें प्राप्त होगा धन्यवाद।।"

आराधना तंवर, कक्षा- 10वीं, शा. उ. मा. वि. कालीपीठ, जिला-राजगढ

पाठकों के फीडबैक

"मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, यह देखकर कि राज्य आनंद संस्थान द्वारा ई-पत्रिका का मासिक प्रकाशन सतत और नियमित किया जा रहा है। पत्रिका के पृष्ट की संख्या, उसकी ऊपरी कवर और अनुक्रमणिका माह भर होने वाली गतिविधियों को इस प्रकार समझाया है कि देखने में लगता है इतना बड़ा काम एक छोटी-सी एक पत्रिका के अंदर आ गया है। मध्य प्रदेश के विद्यालयों में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर इतना अच्छा काम हो रहा है यह मुझे पत्रिका के माध्यम से ही पता चला। मुख्य बात अब यह देखनी है की पत्रिका ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचे जिससे इतने अद्भुत कार्य को सभी को जानने का मौका मिले ई पत्रिका बनाना आसान काम नहीं है पूरी टीम इस कार्य में लगी होगी पूरी टीम को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं बहुत-बहुत बधाइयां सार्थक कार्य में आप सभी लगे है।"

डॉ. उषा खरे, पूर्व प्राचार्य, (राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित), भोपाल म. प्र.

"आनंद संचारिका" को पढ़ते हुए मुझे बार-बार महसूस हुआ कि यह सिर्फ एक पत्रिका नहीं, बल्कि अपने आप से मिलने का एक माध्यम है। जब लोगों के अनुभव पढ़ती हूँ, तो महसूस होता है कि तनाव और ग़ुस्सा कम करने में UHV के अभ्यास कितनी सहजता से मदद करते हैं। मुझे अच्छा लगा कि लोग छोटी-छोटी बातों पर ठहरना सीख रहे हैं और परिस्थितियाँ कठिन हों तब भी शांत रहने का अभ्यास कर पा रहे हैं। रिश्तों में आई

आत्मीयता ने मुझे सबसे ज़्यादा छुआ—दूसरों को अपना मानने का भाव सच में जीवन को हल्का कर देता है। छात्रों में मोबाइल की लत कम करने और प्रकृति-संग रहने के बदलाव पढ़कर ऐसा लगता है जैसे अपने ही घर में परिवर्तन हो रहा हो। पत्रिका बार-बार याद दिलाती है कि किसी बात को बस मान लेना नहीं, बल्कि उसे अपने भीतर परखना है—यह दृष्टि बहुत प्रेरक लगी। युवाओं के अनुभव बताते हैं कि सफलता का अर्थ अब सिर्फ दौड़ में आगे निकलना नहीं, बल्कि सही आचरण और संतुलन है। इन सबके बीच मुझे भी लगा कि मैं अपने जीवन को थोड़ा और सहज, थोड़ा और सजग बनाने की ओर बढ़ सकती हूँ। अंत में, "आनंद संचारिका" मेरे लिए एक ऐसी साथी बन गई है, जो हर पन्ने पर मुझे अपने भीतर लौटने और स्थायी सुख की ओर बढ़ने की याद दिलाती है। विशेष आलेख पढ़कर इस विषय-वस्तु और जीवन की गहराई की स्पष्टता और बढ़ती है। आगे आने वाले विशेष आलेखों का इंतज़ार रहेगा।"

लिपिका मित्रा, निदेशक एवं पेरेंट कोच – भू-शाला, मुंबई (महाराष्ट्र)

"मुझे इस पत्रिका के बारे में अपने विचार साझा करते हुए खुशी हो रही है। आज के समय में, जब डिजिटल माध्यमों से जानकारी का अत्यधिक बोझ है, यह पत्रिका वास्तव में मेरे भीतर शांति और सुकून लेकर आई। मैंने इसे अपने कुछ मित्रों के साथ भी साझा किया और उन्होंने भी वही अनुभव किया। यह किसी व्यक्ति को स्व-अन्वेषण के मार्ग पर निरंतर कार्य करते रहने के लिए प्रेरित करती है। सामग्री को पढ़ते हुए (एक अच्छा पुनरावलोकन हुआ), पाठकों की प्रतिक्रियाएँ देखकर (उनकी यात्रा की एक झलक मिलती है), और चल रहे कार्यक्रमों के बारे में जानकर (यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में कई लोग भाग ले रहे हैं) — यह सब अत्यंत समृद्ध करने वाला अनुभव है। पत्रिका में छात्रों द्वारा प्रस्तुत विचारों से प्रेरित होकर मैंने अपनी सोसाइटी के बच्चों के लिए एक कार्यशाला की योजना बनाई है और मुझे पूरा विश्वास है कि वे भी उसी प्रकार अन्वेषण कर पाएँगे। इस बात पर भी ध्यान गया कि जांच-परख की प्रक्रिया छोटी आयु से ही सक्रिय रहती है। हम सही प्रस्ताव छात्रों तक पहुँचा पाएं तो परिणाम सुखद ही होते हैं।"

श्रीमती निधि चिराग सचदे, यूएचवी वॉलन्टियर, भारत

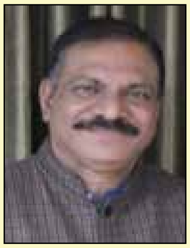

"जिला शिक्षा अधिकारी के रूप में जब भोपाल जिले का कार्यभार श्री धीरेंद्र चतुर्वेदी जी ने संभाला, तभी से ही हम लोगों को सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के बारे में जानकारी हो गई थी। प्रशिक्षण हेतु हम लोग मसूरी भी गए थे राज्य शिक्षा केंद्र में इसकी कई बैठकों को मैंने स्वयं देखा और उपस्थित रहा। सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से संबंधित बातों को

एनसीसी ऑफिसर के रूप में मैं छात्र-छात्राओं के बीच में भी शेयर किया। पत्रिका के आ जाने से साल भर होने वाली गतिविधियों की मुझे जानकारी हुई और इसे मैंने अपने साथियों को भी प्रेषित किया है। एनसीसी ऑफिसर के रूप में मैं तो यही कहना चाहूंगा कि कक्षा आठवीं से ही बच्चों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए जिससे वह अपना संबंध महसूस कर सकें। बहुत सारी बातें पर एक विधि पर तौर पर जो प्रेजेंटेशन बहुत ही सटीक और उत्कृष्ट है छात्र-छात्राओं तक ई-पत्रिका पहुंचे, यही मेरी आप लोगों से अपेक्षा है। इस पुनीत पावन कार्य में लगे सभी साथियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।"

श्री सोमेश सराठे, से. नि. शिक्षक/ एन. सी. सी. ऑफिसर, भोपाल

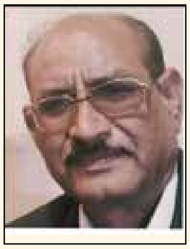

"मुझे इस तत्व ज्ञान के बारे में सन 2005 से पता है, भोपाल जिले में इस प्रकार की सार्वभौमिक मानवीय मूल्य की गतिविधियां होती ही रहती थी, लेकिन निरंतरता नहीं बनी। पत्रिका के ई-प्रकाशन को देखकर और विगत तीन चार वर्षों से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में गतिविधियां चल रही हैं।ऐसा लगता है कि शिक्षा में जिस बात की कमी महसूस हो रही थी, अब उसकी पूर्ति की जा रही है।

राज्य आनंद संस्थान एवं पत्रिका में कार्य करने वाले संरचनात्मक भाई बहनों को मेरी ओर से बहुत सारी शुभकामनाएं। प्राथमिक माध्यमिक विद्यालयों में भी पत्रिका पहुंचे, ऐसा आग्रह है ताकि वहां के शिक्षक भी लाभान्वित हों, जिससे बच्चों पर उसका असर पड़ेगा। ।"

श्री पदम सिंह मारण, से. नि. शिक्षक, नीलबड़, जिला-भोपाल

मूल्य प्रेरणा पुष्प

कविता : सह-अस्तित्व की ओर

जब मन के आकाश में प्रश्न उठते हैं,
जीवन के अर्थ हमें खोजने को कहते हैं।
"मैं कौन हूँ?" जब मन यह जानना चाहे,
तभी समझ का दीपक भीतर जगमगाए।
मानव जीवन का सच्चा आधार,
निरंतर सुख और समृद्धि का विस्तार।
समझ के प्रकाश में जब पथ दिखता है,
जीवन का हर कदम संतुलित दिखता है।
समृद्धि का अर्थ केवल सुविधा संग्रह नहीं,
संसाधनों का सदुपयोग ही सही लगता है ।
संतुष्टि के भाव से जीवन जब भरता है,
संग्रह का मोह स्वयं ही उतरता है।
परिवार में खिलते मधुर भाव अनूप,
नौ भावों से बनता संबंधों का स्वरूप।
विश्वास, सम्मान और स्नेह का विस्तार,
ममता, वात्सल्य से जुड़ता हर परिवार।
कृतज्ञता, गौरव और प्रेम की धार,
मार्गदर्शन से उज्ज्वल होता संसार।
इन भावों से घर बनता सुखधाम,
जहाँ हर सम्बन्ध को मिलता विश्राम।
समाज में हो विश्वास का स्वर,
प्रकृति से हो संतुलित संबंध अमर।
तभी जीवन सच में होगा सार,
जब समझ से सजेगा संसार।

ऋतुराज गोस्वामी,
उच्च माध्यमिक शिक्षिका,
सांदीपनि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मझौली,
जिला- जबलपुर म. प्र.

विद्यालयों से प्राप्त आनंद सभा की झलकियां

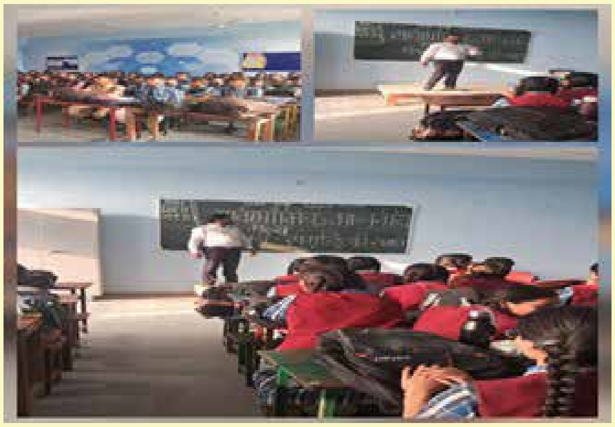

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य समाचार पत्रों की दृष्टि से

आनंद को धन से नहीं खरीद सकते, अंतस से होती है इसकी अनुभूति

- मुख्यमंत्री ने आनंद के आयाम राष्ट्रीय संगोष्ठी को किया संबोधित
- दूसरे के सुख में भी स्व का आनंद ढूंढ़ना है भारतीय संस्कृति की चेतना का आधार
- मुख्यमंत्री ने आनंदोत्सव के विजेताओं को किया पुरस्कृत

अभ्यास से आता है परफेक्शन

राज्य आनंद संस्थान द्वारा मनाया गया अंतरराष्ट्रीय खुशहाली दिवस

पीपुल्स समाचार

आनंद मन की संतुष्टि में है, भौतिक सुख-सुविधाओं में नहीं: सीएम

वर्ल्ड हैप्पीनेस डे पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

भोपाल

आनंद पैसे से नहीं, दिल की अनुभूति व आत्मिक संतोष से मिलता है : मुख्यमंत्री

राज्य आनंद संस्थान द्वारा मनाया गया अंतरराष्ट्रीय खुशहाली दिवस

अंतराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस • 10 साल पूरे कर रहे आनंद संस्थान से 1.41 लाख वॉलंटियर जुड़ चुके

4 हजार स्कूलों में पढ़ाया जाएगा आनंद; 9वीं-10वीं के लिए कोर्स तैयार, 17 सवालों के आधार पर जारी होगा मप्र का हैप्पीनेस इंडेक्स

आज सेमिनार, कई राज्यों के सीएस जुटेंगे

17 सवाल तय करेंगे खुशहाली

पाठकों के लिए महत्त्वपूर्ण सूचना

आनंद संचारिका परिवार अपने सभी रचनाकारों एवं पाठकों का आभार व्यक्त करता है। पत्रिका के आगामी संस्करणों के लिए पाठकों/सदस्यों/छात्रों के सुझाव, यूएचवी गतिविधियाँ, लेख, कहानी आदि मौलिक रचनाएँ निम्न वर्गों में आमंत्रित है:-

1. स्व-मूल्यांकन (सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से अपने जीने में आए बदलाव पर)
2. फीडबैक (सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों एवं आनंद संचारिका से संबंधित फीडबैक/सुझाव)
3. कविता/लेख/कहानी/नाटक (सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित विषय पर)
4. चित्र/ पोस्टर/ गतिविधियाँ (सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित विषय पर)

पाठकगण कृपया ध्यान दें-

- अपनी रचना के साथ अपना नाम, संस्था का नाम, पता, जिला एवं अपना स्पष्ट फोटो अवश्य संलग्न करें। कृपया ई-मेल भेजते समय सब्जेक्ट में "संदेश का वर्ग" का उल्लेख अवश्य करें। आनंद संचारिका में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित मौलिक रचनाएँ ही प्रकाशित की जाती हैं।
- रचना भेजने की अंतिम तिथि प्रत्येक माह की 15 तारीख है।
- कृपया रचनाएँ निम्न ई-मेल आईडी पर ही भेजें- **anandsancharikauhv@gmail.com**
- अन्य माध्यमों से भेजी गई, एक से अधिक अथवा विषय से भिन्न रचनाओं पर विचार नहीं किया जाएगा।
- किसी रचना/चित्र/अन्य सामग्री के प्रकाशन के अधिकार/ निर्णय केवल संपादक मंडल द्वारा लिया जाएगा।
- सभी प्रकाशन पूर्णतः निःशुल्क हैं।
- कॉपीराइट उल्लंघन दंडनीय है। इसकी संपूर्ण जवाबदेही आपकी होगी।

नोट-1: सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त प्राचार्य, शिक्षक एवं आनंद सभा के विद्यार्थी अपनी यात्रा संबंधी 'स्व-मूल्यांकन' एवम् पाठकगण भी 'आनंद संचारिका' का फीडबैक पत्रिका में प्रकाशन हेतु उक्त ईमेल आइडी पर भेजें।

-संपादक मंडल, आनंद संचारिका

राज्य आनंद संस्थान

स्थापना – अगस्त 2016 में राज्य आनंद विभाग के अंतर्गत गठन।

उद्देश्य – नागरिकों की आंतरिक अनुभूति और बाह्य सुख-समृद्धि सुनिश्चित करना।

मूल सिद्धांत – केवल भौतिक प्रगति से आनंद संभव नहीं है। यह मानसिक, शारीरिक व भावनात्मक उन्नति से ही संभव है। विकास को मूल्य आधारित और आनंद केंद्रित होना चाहिए।

प्रमुख कार्यक्षेत्र – नागरिकों को आनंद बढ़ाने वाली पद्धति व अभ्यास उपलब्ध कराना।

आनंद सभा

"सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों (UHV) से आनंद की ओर"

पृष्ठभूमि – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा में मूल्य, करुणा और सहानुभूति का विकास आवश्यक।

उद्देश्य – विद्यार्थियों में मानव लक्ष्य, मूल्य, संबंधों की समझ व सम्यक दृष्टि विकसित करना।

सामग्री एवं प्रशिक्षण – "सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर" पुस्तकों व वर्कबुक का निर्माण किया गया है एवं शिक्षकों को कक्षा में इस विषय को पढ़ाने हेतु 6 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

कार्यक्रम – कक्षा 9 से 12 में हर शनिवार "आनंद सभा" के अंतर्गत यूएचवी सत्र व गतिविधियाँ तथा महाविद्यालयों में कार्यक्रम संचालन हेतु शिक्षकों की तैयारी।

परिणाम – विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, जीवन-दृष्टि और मूल्यपरक आचरण का विकास।

सहयोगी संस्थान – AICTE, स्कूल शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग (म.प्र. शासन), राज्य आनंद संस्थान और यूएचवी फाउंडेशन ।

: संपर्क विवरण :

राज्य आनंद संस्थान, बोर्ड ऑफिस कैंपस, डीबी मॉल के पीछे शिवाजी नगर, भोपाल म. प्र. 462011

0755-2553434 ईमेल : (anandsancharikauhv@gmail.com) (anandsansthan@mp.gov.in)